सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2023 का नवम-दशम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् तिबोर कोकेनी द्वारा लिखित Depression and its possible support with Yoga in Daily Life exercises शोध लेख में योग के माध्यम से मानसिक अवसाद को दूर करने उपाय बतलाये गये हैं। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'संस्कृत भाषा की विशिष्टता' लेख में संस्कृत भाषा का महत्त्व बताते हुये भाषाशास्त्र की दृष्टि से संस्कृत की वैज्ञानिकता को प्रकाशित किया गया है। तत्पश्चात् डॉ. विश्वावसु गौड एवं प्रो. वैद्य बनवारीलाल गौड द्वारा लिखित 'पितृभ्यः पिण्डदः स्यात्' शोध लेख में श्राद्ध के आयुर्वेदीय महत्त्व को मूल्यांकित गया है। इसी क्रम में देवेन्द्र सिंह मौचानी द्वारा लिखित 'अग्निवंशवर्णन' लेख में अग्निवंश के विस्तार पर पौराणिक प्रमाणों का उपस्थापन किया गया है। तत्पश्चात डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'वन्दे वाणी विनायकौ' शोधलेख में गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस के मंगलाचरण के प्रथम पद्य की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। तत्पश्चात् डॉ. तारेश कुमार शर्मा द्वारा लिखित 'राजतरङ्गिणी का साहित्यिक महत्त्व' शोध लेख में राजतरङ्गिणी की ऐतिहासिकता के साथ-साथ लेखक के कवित्व का शास्त्रीय मूल्यांकन किया गया है। तत्पश्चात् गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित 'राधाकृष्ण के अनन्य भक्त नागरीदास' लेख में संत नागरीदास की कृष्ण भक्ति का प्रस्तुतीकरण किया गया है। इसी क्रम में डॉ. मनीषा शर्मा द्वारा लिखित 'स्वस्थ जीवन का आधार योग' लेख में योग के माध्यम से स्वास्थ्य की उपलब्धि एवं आयुष्य की वृद्धि को प्रतिपादित किया गया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा